बोधिपथप्रदीपम्

(तिब्बती-हिन्दी अनुवाद)

रिगज़िन लुनडुब लामा

बुद्ध विहार,
लखनऊ

बोधिपथप्रदीपम्

(तिब्बती-हिन्दी अनुवाद)

अनुवादक

रिगज़िन लुनडुब लामा

तिब्बती प्राध्यापक,

नव नालन्दा महाविहार

नालन्दा (पटना) बिहार

प्रकाशक

भिक्षु ग० प्रज्ञानन्द

बुद्ध विहार, रिसालदार पार्क,

लखनऊ
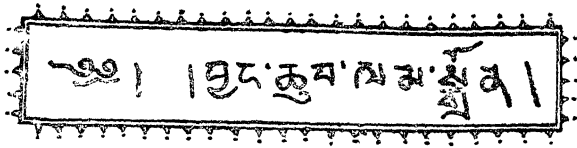
बोधिपथ प्रदीप के प्रकाशन का उद्देश्य भारतीय मनीषियों का ऐतिहासिक युग से तिब्बत के साथ सांस्कृतिक एवं धार्मिक सम्बन्ध को हिन्दी भाषा-भाषी आधुनिक जनता के सामने लाने की आवश्यकता को प्रकाश में लाना है।

तिब्बती भाषा के अध्ययन के प्रेमियों के लाभ के लिये इस पुस्तिका में आये तिब्बती शब्द हिन्दी अर्थ सहित अन्त में दिये हैं।

ये लघु-कृतियां महायान मार्ग और उसकी अपनी निवृत्ति मार्ग की मान्यताओं का दिग्दर्शन करने के लिये एक योग्य साधन है। इनमें सूत्र और उच्च दैवी तांत्रिक परम्पराओं का समावेश है।

सम्बन्धित विषय के विज्ञ जनों के सहयोग से हम उत्तरोत्तर इसमें समर्थ हों, यही कामना है।

३-५-५६

—प्रकाशक

प्राक्कथन

दीपंकर श्रीज्ञान तिब्बत के अनुबुद्ध हैं। उनका जन्म विक्रमशिला के जहोर में महाराज कल्याण श्री और महारानी प्रभावती के पुत्र रूप में हुआ था। तीन पुत्रों मे वे दूसरे थे और नाम था चन्द्रगर्भ। अनुश्रुति के अनुसार ऐसा कहा जाता है कि बाल्यकाल में वे आर्यातारा के प्रभाव में थे उसी कारण वे राजकीय अधिकारों के प्रति आशक्त नहीं हुए और विदेशों में गुरू की खोज में भ्रमण करते रहे। २६ वर्ष की अवस्था में उन्होंने दीक्षा ली थी। उन्होंने प्रज्ञापारमिता का और वज्रयान का अभ्यास किया। ५७ वर्ष की पूर्ण वय मे यह महान सन्त तिब्बत के लिये प्रस्थान किये थे।

तिब्बत के विद्वानों मे प्रचलित कुछ मतभेदों का स्पष्टीकरण करने के लिये उन्होंने "बोधि पथ प्रदीप" की रचना की थी। इस कृति मे उन्होंने तीन प्रकार के मनुष्यों की व्याख्या की है। निम्न कोटि का व्यक्ति वह है जो मृत्यु को महत्व देता है, क्योंकि यदि कोई अपने को सांसारिक वस्तुओं से नहीं हटाता है, तो कोई सन्त पुरुष नहीं हो सकता है। मध्यम कोटि का वह है जो स्कन्धों [भव बन्धन] पर मनन एव आत्मसात कर दुःख निवृत्ति कर लेता है। श्रेष्टतम कोटि के मनुष्य वे है जो प्रथमतः बोधि-मार्ग का आलम्बन कर उसी के द्वारा माध्यमिक वृत्ति को प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन इनमें प्रज्ञा और उपाय का सम्मिश्रण होना आवश्यक है। क्योंकि निरा-ध्यान परम शून्यता की प्राप्ति का कारण नहीं होता। उन्होंने एक योग्य गुरू की आवश्यकता पर जोर दिया है। और वे कहते हैं कि इसके बिना तान्त्रिक प्रयोगों का अर्थ सिद्ध नहीं होता। इसी प्रकार प्रथमतः समथ-भावना का अभ्यास करना आवश्यक है। अन्यथा ध्यानाभ्यास असम्भव है।

दीपंकर श्रीज्ञान कृत "बोधि पथ प्रदीप" का उनके परवर्ती अनुगामियों पर विशेष प्रभाव पड़ा है। कमलशील ने अपनी कृति "भावना क्रम" को "बोधि पथ प्रदीप" के ही साँचे मे ढाला है। स्गम्पो-पा ने अपनी अनुपम कृति लम्-रिड. अर्थात् "सद्धर्म चिन्ता मणि अलंकार मार्ग क्रम" में पग-पग पर इसका उद्धरण दिया है और पुस्तक के प्रारम्भ में तो इसके प्रति अपनी कृतज्ञता भी स्वीकार किया है।

ये लघु-कृतियां महायान मार्ग और उसकी अपनी निवृत्ति मार्ग की मान्यताओं का दिग्दर्शन करने के लिये एक योग्य साधन है। इनमें सूत्र और उच्च दैवी-तांत्रिक परम्पराओं का समावेश है।

मैंने लामा रिगजिन लुनडुप के इन अनुवादों को बड़ी रुचि से पढ़ा है। मैं कहूँगा कि इन्होंने इस महत्व पूर्ण कार्य को बड़ी ईमानदारी से निभाया है। मैं अपने मित्र लामा रिगजिन लुनडुप को इन अनुवादों के लिये बधाई देता हूँ। मुझे आशा है आप कभी इनकी अट्ठकथाओं को भी हमे देंगे जो कि समान रूप से महत्वपूर्ण है।

—**हरबर्ट वी० गुन्थर** पी० एच० डी०

भूमिका

अतिशा का दूसरा नाम है श्री दीपंकर ज्ञान। तिब्बती भाषा में अतिशा को फुल-ब्युङ और श्री दीपंकर ज्ञान को द्पल-मर-मे-मज़द कहते हैं। वैसे तो तिब्बती में ये कई नाम से पुकारे जाते हैं, जैसे, जो-वो-र्जे, द्पल-ल्दन अतिशा आदि। इनका जन्म बंगाल में ६८० ई० में राजकुमार के रूप में हुआ। आपके पिता का नाम कल्याण श्री और माता का नाम प्रभावती था। आपने ओदन्तपुरी विहार में प्रवेश कर महायानी बौद्ध धर्म के साथ बौद्ध तन्त्र का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन किया था। बाद में विक्रमशिला विहार में जाकर बौद्ध धर्म के अध्यायन का कार्य करते हुए जनता का हित किया। लगभग ६० वर्ष की अवस्था में तिब्बती सम्राट ये-शेस् होद (ज्ञान प्रभ) के निमंत्रण पर वे तिब्बत चले गए। फिर तिब्बत में १० साल से अधिक बौद्ध धर्म के प्रचार और बौद्ध ग्रन्थों के अनुवाद का कार्य कर आपने तिब्बती जनता का महान उपकार किया। आपने लगभग २५ पुस्तकें लिखीं जो आज भी तिब्बती तन-ग्युर में सुरक्षित हैं। यह दुःख की बात है कि संस्कृत में इनकी लिखित एक भी पुस्तक उपलब्ध नहीं है। आपने माध्यमिक योगाचर और बौद्ध तन्त्र का विशेष रूप से अध्ययन किया था। तन्त्र का अध्ययन ही नहीं अपितु साधना-भावना कर आपने सिद्धि भी प्राप्त की। ई० ११ में आपने ब्कह्-गदम-प सम्प्रदाय की स्थापना की। अतिशा के प्रधान शिष्य स्ब्रोम-स्तोन (तिब्बती) ने आपकी एक जीवनी लिखी। आपके परशिष्य मर-प ने ब्कह्-ग्युद्-प सम्प्रदाय की स्थापना की जिसका बाद

में मर-प के शिष्य महासिद्ध मिला-रस्-प के द्वारा खूब प्रचार हुआ। ७३ साल की अवस्था में ल्हासा से एक दिन के रास्ते पर ञे-थङ विहार में आपका देहावसान हुआ। तिब्बती बौद्ध धर्म के इतिहास में अतिशा के अद्भुत व्यक्तित्व का अद्वितीय स्थान रहा है। प्रस्तुत पुस्तक उन्होंने थो-ग्लिङ नामक मठ में लिखी थी। यह मठ मानसरोवर के पश्चिम में अवस्थित है। तिब्बत में इसका हर धार्मिक अवसर पर पाठ किया जाता है। इस ग्रन्थ में श्रावकयान, बोधिसत्वयान या महायान और मंत्र-यान या वज्रयान के आदर्श भेद पर प्रकाश डाला गया है। महायान और वज्रयान दोनों के लिए प्रज्ञा तथा उपाय के एकीकरण के ऊपर जोर दिया गया है। क्योंकि बुद्धत्व को प्राप्त करना प्रज्ञा और उपाय के सामरस्य के बिना असम्भव है। वज्रयानी साधकों को किसी योग्य गुरु की शिक्षा आवश्यक होती है। इसका मतलब यह नहीं कि श्रावकयानी का प्रज्ञा और उपाय से कोई सम्बन्ध ही नहीं है। महायान और हीन यान का अभिप्राय साम्प्रदायिकता से नहीं है, प्रत्युत उनकी उदारता से है। श्री लंका, बर्मा आदि में स्थविरवाद का प्रचार हुआ। पर वहाँ भी बोधिसत्वों के आदर्श सम्पन्न कई महापुरुष पाये जाते हैं। तिब्बत, चीन आदि में महायान का प्रचार हुआ, लेकिन साथ-साथ वहाँ कृपणों, पक्षपातियों और स्वार्थियों की भी कमी नहीं है। इस ग्रन्थ में प्रयुक्त तिब्बती-हिन्दी शब्दावली ग्रंथ के अन्त में दी गई है। यह क्रम तिब्बती ग्रन्थ के अनुसार है। पाठक यदि इस ग्रन्थ को तिब्बती ग्रन्थ के साथ तुलनात्मक रूप में पढ़ें तो तिब्बती में लिखित बौद्ध ग्रन्थों के पढ़ने में सुगमता होगी तथा उन्हें यह भी प्रतीत होगा कि मेरा अनुवाद कहाँ तक सफल हुआ है। अंत में मैं अपने सुयोग्य मित्र श्री हरबर्ट वी० गुन्थर पी० एच० डी० को तदर्थ धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने

मुझे न केवल इस ग्रन्थ का अनुवाद करने के लिए प्रेरित किया वरन् इसका प्राक्कथन लिखने का भी कष्ट किया। अब तिब्बती से इस ग्रन्थ का रूप हिन्दी में परिवर्तित होकर हिन्दी भाषा-भाषी एवं बौद्ध धर्म प्रेमियों के संमुख उपस्थित है और आशा है कि वे इसे अपनाकर मेरे परिश्रम को सार्थक करेंगे।

१९५९

रिगज़िन लुनडुब लामा
नव नालन्दा महा विहार
नालन्दा (पटना) विहार

॥ बोधिपथ-प्रदीपम् ॥[1]

बोधिसत्व मंजुश्री कुमारभूत को नमस्कार ।

१ त्रिकाल के समस्त बुद्धों और उनके धर्मों तथा संघों को सादर वन्दना कर, भद्रशिष्य बोधिप्रभ की प्रेरणा से बोधि पथ प्रदीप का प्रकाशन किया जा रहा है ।

२ (लोक में) तीन प्रकार के पुरुष समझना चाहिए—लघु (हीन), मध्यम और उत्तम । उनके लक्षणों को प्रकाश में लाने के लिए यहाँ प्रत्येक के भेद का निरूपण किया जाता है ।

३ जो किसी प्रकार के उपाय से अपने लिए सांसारिक सुख मात्र प्राप्त करने की चेष्टा करता हो, उसको अन्तिम (हीन = लघु) पुरुष समझना चाहिए ।

४ जो भौतिक (भव) सुख से विमुख हो तथा पाप कर्मों से विरत रहकर, केवल अपने लिए शान्ति की अभिलाषा करता हो, वह मध्यम पुरुष कहलाता है ।

१-संस्कृत भाषा में—बोधिपथप्रदीपम्
तिब्बती भाषा में—ब्यङ छुब-लम-स्ग्रोन

५ जो अपने मन के अन्तर्गत दुःख के द्वारा पराये समस्त दुःखों को सर्वथा क्षीण करना चाहता हो, वही उत्तम पुरुष है ।

६ परम बोधित्व प्राप्ति के अभिलाषी सद्प्राणियों के लिए यहाँ गुरु निर्दिष्ट यथार्थ उपाय बताया जाता है ।

७ सम्बुद्धों के चित्र, स्तूप, सद्धर्म आदि की उनके अभिमुख हो पुष्प, धूप अथवा पूजा के योग्य सामग्रियों से पूजा करनी चाहिए ।

८ समन्त भद्रचर्या में कथित सात प्रकार१ के पूजन के साथ बोधिगर्भ की प्राप्ति के लिए अनिर्वचनीय चित्त से त्रिरत्न पर श्रद्धा कर, भूमि पर घुटने टेक, अंजलि बांध, तीन बार त्रिशरण में जाना चाहिए ।

९ तब समस्त प्राणियों के प्रति मैत्रीचित्त भावना कर, जन्म-मरण आदि से पीड़ित तीनों दुर्गति अथवा समस्त जगत पर दृष्टि पात कर, उन्हें दुःख और दुःख के मूल कारणों से मुक्त करने की कामना करते हुए प्रतिज्ञा पूर्वक बोधिचित्त उत्पन्न करना चाहिए ।

१–दुखी प्राणियों को उद्धार करने के लिए बोधित्व प्राप्ति की प्रबल इच्छा होती है उसे प्रणिधान चित्त कहते हैं ।

१० इस प्रकार प्रणिधान चित्त[१] उत्पन्न करने के गुण का वर्णन मैत्रेय द्वारा गण्डव्यूह सूत्र में किया गया है ।

११ उन सूत्रों का पाठ करे अथवा गुरु से श्रवण करे और सम्बोधि चित्त के गुण को अनन्त समझ कर उसकी (बोधिचित्त) स्थिति के लिये बार-बार चित्तोत्पाद करना चाहिये ।

१२ इसके पुण्य का प्रदर्शन वीर दत्त परिपृच्छ सूत्र में किया गया है । यहाँ संक्षेप में उसके तीन पाद का उल्लेख किया जाता है ।

१३ यदि इस बोधिचित्त का पुण्य साकार होता, तो समग्र आकाश धातु की अपेक्षा अधिक बड़ा होता ।

१४ गंगा के बालू तुल्य अनेक बुद्ध क्षेत्रों को रत्नों से भर कर लोकनाथ को समर्पित करने की अपेक्षा, कोई व्यक्ति यदि अंजलि बांध बोधित्व की ओर नत-चित्त होवे, तो उसकी वह पूजा कहीं अधिक श्रेयस्कर होगी ।

१५ बोधि प्रणिधिचित्त उत्पन्न कर, अनेक परिश्रमों के द्वारा उस बोधिचित्त का सर्वत्र प्रसार करना चाहिये । इस

१–"वन्दन, पूजन, पाप देशना, पुण्यानुमोदन, बुद्धाध्येषण, बुद्धयाचना तथा बोधिपरिणामना ।"

बोधिचित्त का जन्मान्तर में भी स्मरण करने के लिए यथोपदिष्ट शिक्षा का भी पालन करना चाहिए ।

१६ (बोधि) प्रस्थान चित्त[१] और आत्म-संयम के बिना इस प्रणिधान की वृद्धि हो नहीं सकती । इसलिये प्रणिधान की वृद्धि के लिये यत्न पूर्वक उक्त नियमों का अवश्य पालन करना चाहिये ।

१७ (कोई भी प्राणी) सातों प्रातिमोक्ष नियमों से युक्त होने पर बोधिसत्वों के संवर का अधिकारी हो सकता है अन्यथा नहीं ।

१८ तथागत ने सात प्रकार के प्रातिमोक्ष बताए हैं । उनमें से ब्रह्मचर्य ही उत्कृष्ट है जो भिक्षु नियम माना जाता है ।

१९ बोधिसत्व भूमि के शील परिवर्त में बताई गई विधि द्वारा सम्यक् लक्षणों से युक्त सद्गुरु से दीक्षा लेनी चाहिये ।

२० जो संवर विधि में कुशल हो, स्वयं नियमों का पालन करता हो और दीक्षा देने में समर्थ तथा करुणा-मय हो उसे सद्गुरु समझना चाहिये ।

१—पारमिताओं का अभ्यास करना बोधि प्रस्थान या बोधि चर्या कहलाती है ।

२१ यदि प्रयत्न करने पर भी ऐसे गुरु की प्राप्ति न हो सके, तो दीक्षा लेने की अन्य विधि बतायी जाती है।

२२ प्राचीन काल में जब मंजुश्री का जन्म अम्बराजा के रूप में हुआ था, तो उन्होंने जिस प्रकार बोधि चित्त उत्पन्न किया था, जिसका कथन मंजुश्री-बुद्धक्षेत्र-गुण व्यूह-सूत्र में हुआ है, उसी प्रकार यहाँ उल्लेख किया जाता है।

२३ नाथों (बुद्धों) के सामने इस प्रकार संबोधि चित्त उत्पन्न करना चाहिये कि मैं समस्त जगत् को आमंत्रित कर उन्हें आवागमन से मुक्त करूंगा।

२४ आज से लेकर बोधित्व की प्राप्ति तक प्रतिहिंसा, क्रोध, मात्सर्य तथा ईर्ष्या नहीं करूंगा।

२५ ब्रह्मचर्य का निर्वाह करूंगा। पातकों और रागों को त्याग दूँगा। शील संवर में प्रीति होकर बुद्धों का अनुशिक्षण करूंगा।

२६ अपने को शीघ्र बोधित्व प्राप्ति के लिये उत्साहित नहीं करना चाहिए। एक प्राणी के (उद्धार) के लिये कल्पों तक आवागमन में विचरना चाहिये।

२७ अप्रमेय और अचिन्त्य (बुद्ध) क्षेत्रों का परिशोधन करना चाहिये। दश दिशाओं में स्थित बुद्धों का नाम

लेकर अपने काय, वाक और मन द्वारा किये गये (पाप) कर्मों का परिशोधन करना चाहिये। किसी भी प्रकार अकुशल कर्मों को नहीं करना चाहिये।

२८ कायिक, वाचिक और मानसिक शुद्धि द्वारा बोधिचित्त प्रस्थान तथा आत्म-संयम पर सुदृढ़ हो, त्रिशिक्षाओं का ठीक से यदि पालन किया जाय, तो तीन शिक्षाओ पर श्रद्धा बढ़ती जाती है।

२९ इस तरह बोधि सत्वों की शिक्षा का यत्न पूर्वक निर्वाह करने से संबोधि-संभार शीघ्र परिपूर्ण होता है।

३० यह सर्व बुद्धों की मान्यता है कि पूर्ण सम्भार और ज्ञान-सम्भार के शीघ्र परिपूर्ण करने के लिये अभिज्ञा उत्पन्न करने की आवश्यकता है।

३१ बिना पंख बढ़े पक्षी जैसे आकाश में उड़ नहीं सकता वैसे ही अभिज्ञा की क्षमता बिना प्राणियों का हित नहीं कर सकता।

३२ अभिज्ञानी के द्वारा किये २४ घन्टे का पुण्य अभिज्ञा रहित (व्यक्ति) द्वारा शत जन्मों में भी अर्जित नहीं किया जा सकता।

३३ इसलिये जो शीघ्र संबोधि संभार के परिपूर्ण करने की इच्छा करता हो, उसे यत्नपूर्वक अभिज्ञा उत्पन्न करनी चाहिये, तभी सिद्धि मिलेगी। आलस्य से नहीं।

३४ शमथ (समाधि) सिद्ध किये बिना अभिज्ञा उत्पन्न नहीं होती। इसलिये समाधि की साधना के लिये बार-बार यत्न करना चाहिये।

३५ शमथ के अंग हीन होने से सहस्राब्दियों तक भावना करने पर भी समाधि की सिद्धि नहीं हो सकती।

३६ अतः समाधि सम्भार परिवर्त में कथित अंगों के आश्रय से अपने चित्त को (ध्यान के) आलम्बन में लगाये रखना चाहिये।

३७ योगी को समाधि की सिद्धि हो जाने पर अभिज्ञा की भी सिद्धि हो जाती है। प्रज्ञा-पारमिता के बिना आवरण (क्लेश) क्षीण नहीं हो सकता।

३८ इसलिये क्लेशावरण और ज्ञेयावरण दोनों के परित्याग के लिए योगी को सदैव उपाय के साथ प्रज्ञापारमिता की भावना करनी चाहिये।

३९ क्योंकि उपाय रहित प्रज्ञा और प्रज्ञा रहित उपाय भी बुद्ध ने बन्धन कहा है। अतएव दोनों का परित्याग नहीं करना चाहिए।

४० ये प्रज्ञा और उपाय क्या हैं ? इस सन्देह को दूर करने के लिए दोनों का प्रभेद बताया जाता है।

१–दान पारमिता आदि मुख्यतः छः पारमिताएं हैं। दानः–

४१ प्रज्ञा पारमिता को छोड़ दान पारमिता[१] आदि सभी कुशल धर्मों को बुद्धों ने उपाय बताया है ।

४२ जो उपाय का अभ्यास कर प्रज्ञा की भावना करता है वही शीघ्र ही बोधित्व प्राप्त कर सकता है । केवल नैरात्म्य[१] की भावना करने से ही नहीं ।

४३ स्कन्धों[२], धातुओं[३] और आयतनों[४] को स्वभावतः अनुत्पाद तथा शून्य जान लेना प्रज्ञा कहलाती है ।

४४ सत् की उत्पत्ति अयुक्त है (क्योंकि जो "सत्" है वह तो पहले "है" और उसकी पुनरुत्पत्ति मानना व्यर्थ है) । असत् की भी उत्पत्ति नहीं (हो सकती क्योंकि जो "असत्" है वह ख-पुष्प के समान है ।

द्रव्य दान, धर्म दान, अभय दान आदि । दाता-लाभ-सत्कार के लिए दान करने वाले, यश प्राप्ति के लिए दान करने वाले, दूसरे से प्रेरित होकर दान देने वाले, करुणा-वश दान करने वाले आदि । दानपात्र-त्रिरत्न को दान देना, गुरुजनों को दान देना, साधारण प्राणियों को दान देना आदि ।

१-धर्म नैरात्म्य और पुद्गल नैरात्म्य । विस्तार के लिए त्रिंशिका में देखिए । स्दे-दूगे संस्करण तनग्युर "शि" लेखक वसुबन्धु ।

२-रूप, वेदना, सञ्ज्ञा, संस्कार और विज्ञान ।

३-धातु १८ हैं ४-आयतन १२ हैं ।

दोनों अर्थात् सत् और असत् परस्पर विरुद्ध स्वभाव वाले होने के कारण (जैसे प्रकाश और अंधकार) उभय की भी उत्पत्ति नहीं हो सकती।

पदार्थ न स्वतः उत्पन्न होता है, न परतः, न उभयतः और न अहेतुक ही। इसलिए स्वरूपतः (समस्त धर्म) निःस्वभाव है।

अथवा समस्त धर्म (बुद्धिग्राह्य पदार्थ) का अनेकानेक रूप से विचार करने पर उसका स्वरूप अनुपलब्ध प्रतीत होता है। इसलिए समस्त धर्म निःस्वभाव ही सिद्ध होते हैं।

शून्यता सप्तति[१], युक्तिषष्ठिका, मूल माध्यमिक आदि में भी बताया गया है कि पदार्थों का स्वभाव शून्य है। ग्रन्थों की बहुलता के कारण यहाँ विस्तार से उल्लेख नहीं किया गया है। अतः (पुस्तिका में) केवल सिद्धि की उपलब्धि तथा भावना के निमित्त (संक्षिप्त) सिद्धांत बताया गया है।

इस प्रकार समस्त धर्मों का स्वभाव अनुपलब्धि है। इसलिए नैराम्य की भावना करना ही प्रज्ञा की भावना करना है।

---

१ शून्यता सप्तति आदि उपर्युक्त तीनों ग्रन्थ लेखक के नागार्जुन हैं।

प्रज्ञा के द्वारा समस्त धर्मों के निःस्वभाव होने का ज्ञान प्राप्त कर निर्विकल्प के साथ उसी प्रज्ञा की भावना करनी चाहिए।

(भव) संसार की उत्पत्ति विकल्प से हुई है। इसलिए समस्त विकल्पों को परित्याग करने से परम निर्वाण की प्राप्ति होती है।

भगवान् बुद्ध ने भी कहा है—यह विकल्प महान अविद्याजन्य है। यह भव सागर में गिराने वाला है। निर्विकल्प होकर समाधिस्थ होने पर आकाश की भांति अविकल्प का साक्षात्कार होता है।

अविकल्प प्रवेश धारिणी[१] में भी कहा गया है—यदि जिन पुत्र (=बोधिसत्व) इस सद्धर्म पर निर्विकल्प का चिन्तन करे, तो दुर्गम विकल्प को पारकर क्रमशः अविकल्प को प्राप्त करता है।

आगम और युक्ति के द्वारा समस्त धर्मों को अनुत्पाद तथा निःस्वभाव जानकर अविकल्प की भावना करनी चाहिए।

---

१ यह कमलशील की कृति है। स्दे-दूगे संस्करण बूस्तन-बूस्ग्युर=तनग्युर E=जि में देखिए।

इस प्रकार भावना करने पर क्रमशः उष्णता[1] आदि पाकर प्रमुदिता[2] आदि प्राप्त करता है और बोधित्व की प्राप्ति में विलम्ब नहीं होता है।

कलशभद्र आदि आठ महासिद्ध भी यह मानते हैं कि मन्त्र-शक्ति द्वारा सिद्ध किये जाने वाले शान्त और विपुल आदि कर्मों तथा सुखों के द्वारा बोधि-संभार शीघ्र परिपूर्ण होता है।

यदि क्रिया[3] और चर्या तन्त्र आदि में कथित गुह्यमंत्र का आचरण करना हो तो सर्वप्रथम आचार्य (योग्य-गुरु) से अभिषेक[4] प्राप्त करना आवश्यक है। इसके लिए गुरु की आज्ञा पालन, उसे बहुमूल्य भेंट देना तथा आदर-सत्कार द्वारा उसे प्रसन्न करना चाहिए। गुरु प्रसन्न होने पर शिष्य के समस्त पाप धुल जाते हैं और वह सिद्धि का भागी (=अधिकारी) होता है।

आदि बुद्ध महातन्त्र में इस बात का अत्यन्त निषेध है कि ब्रह्मचारियों को गुह्य ज्ञानाभिषेक नहीं ग्रहण करना चाहिए।

---

१ योगासन और ध्यान की एक अवस्था।

२ दस भूमियों में से प्रथम भूमि।

३ क्रिया तन्त, चर्या तंत्र, योग तंत्र और अनुत्तर योग तत्र।

४ कलशाभिषेक, गुह्याभिषेक, प्रज्ञा-ज्ञानाभिषेक तथा वागाभिषेक।

यदि अभिषेक ग्रहण किया जाय तो ब्रह्मचर्यवास नष्ट हो जाता हैं क्योंकि उसे (भिक्षु नियमों के विरुद्ध) निषेधों का भोग अर्थात् विपरीत आचरण करना पड़ता है। जिससे उसका ब्रत टूट कर पाराजिक[१] होता है तथा दुर्गति में जाकर उसे सिद्धि कदापि नहीं मिलती। और यदि ब्रह्मचर्यवास वाले को अभिषेक देने वाले आचार्य से अनुमति मिल जाय तथा वह (शष्य) तत्व का ज्ञान भी रखता हो, तो वह समस्त तन्त्रों के श्रवण, व्याख्यान, होम तथा यज्ञदान आदि कर सकता है। इससे उसको कोई अपराध नहीं होता।

बोधिप्रभ के आग्रह पर स्थविर दीपंकर श्री ज्ञान ने सूत्र (पिटक) आदि के आधार पर बोधिपथ का निर्देश संक्षिप्त रूप में किया है।

दीपंकर श्री ज्ञान और तिब्बती दुभाषिया भिक्षु कल्याणमति द्वारा अनूदित, संशोधित तथा निर्धारित बोधिपथप्रदीपग्रन्थ-- समाप्त।

---

१ पाराजिक चार हैं:—मैथुन, चोरी, मनुष्य हत्या और दिव्य शक्ति का दावा।

भिक्षुणियों के लिए आठ पाराजिक हैं। विस्तार के लिए भिक्षुणी प्रतिमोक्ष में देखिए।

इस ग्रन्थ में प्रयुक्त तिब्बती-हिन्दी शब्द कोष

ब्यङ-छुब	बोधि
लम	पथ
ग्यि	का, के, की
स्ग्रोन-म	प्रदीप
ब्यङ-छुब-सेमस्-प	बोधिसत्व
ह्जम	मंजु
द्पल	श्री
ग्शोन-नु	कुमार
ग्युर-प	भूत
ल	को, के लिए
फ्यग ह्छल-लो	नमस्कार
दुस्	काल, समय
ग्सुम	त्रि, तीन
र्‌यल-व	जिन (बुद्ध)
थमस्-चद	सर्व, सब, समस्त
दङ	और
दे-यि	उनका, के, की, उसका, के, की
छोस्	धर्म

द्गे-ह्दुन	संघ
र्नमस्	(बहुवचन का चिन्ह
ल	को
गुस्-प-छेन-पोस्	सादर,
फ्यग-ब्यस्-ते	वन्दना कर
स्लोब-म	शिष्य, शिष्या
ब्सङ-पो	भद्र
ब्यङ-छुब-होद	बोधिप्रभ
क्यिस्	से, ने
ब्स्कुल-ब्युर-पस्	प्रेरणा से,
ब्यं-छुब-लं-गि-स्ग्रोन-म	बोधिपथप्रदीप
रब-तु-ग्सल-ब	प्रकाशन, प्रकाशन, प्रकाशित होना
ब्य	किया जाय, करना चाहिए
छुङ-ङु	लघु, अधम,
ह्ब्रिङ	मध्यम
द्ङ	और
म्छोग	उत्तम, श्रेष्ठ
स्क्येस्-बु	पुरुष
ग्सुम	तीन
दु	को, के लिए
शेस्-पर-ब्य	समझना चाहिये, जानना चाहिए,

दे-दग (गि)	उनके
मृछन-जिद	लक्षण
रब-गसल-ब	प्रकाश, प्रकाशित करना,
मो-मो	अलग-अलग, प्रत्येक
सो-सोइ	प्रत्येक का
द्ब्ये-व	भेद
ब्रि-वर-ब्य	उल्लेख किया जाता है
गङ-शिग	जो
थबस	उपाय
गङ-दग-गिस	किसी से, किसी ने
ह्खोर-वइ	सांसारिक
ब्दे-व	सुख
चम	मात्र,भर
दग-ल	को, के लिए
रङ-जिद	स्वयं, खुद
दोन-दु-ग्ञेर-व	प्रार्थना करना, चाहना
दे-नि	वह
स्क्येस् बु	पुरुष
थ-म	अन्तिम, अधम, हीन
शेस्	समझना चाहिए, समझो,
स्रिद्-प (इ)	भव, भौतिक

ब्दे	सुख
ए्यब-फ्योगस्-शिङ	विमुख होकर
स्दिग-पङ-लस्	पाप कर्म
लस्	से
ल्दोग-प	विरत रहना
ब्दग ञिद (चन)	आत्मा, स्वयं, वाला
गङ-शिग	जो
रङ	स्व,
शि (व)	शान्ति, शान्त
चम	मात्र, भर
दोन-ग्ञेर-व	अभिलाषा करना, चाहना
स्क्येस्-बु	पुरुष
दे-नि	वह
हब्रिङ	मध्यम
शेस्-ब्य	कहलाता है
रङ-ए्युद	अपने मन
ग्तोगस-प	संबंधित, अन्तर्गत
स्दुग-बस्ङल	दुःख
ग्यिस्	से, ने, द्वारा
गङ शिग	जो

ग्शन ग्यि	पराया, पराये, परायी
स्दुग-ब्स्ङल्-कुन	समस्त दुःख
यङ दग	सम्यग् , सर्वथा, यथार्थ
सद्-प	क्षीण होना
कुन-नस्	हर तरह से, सर्वतः
ह्दोद (प)	चाहना, चाहत
मछोग	उत्तम, परम, श्रेष्ठ
यिन-नो	है, हैं, हूँ, हो
सेमस्-चन	प्राणी, सत्व
दम-प	सत्, सद्
दे-दग-ल	उन्हें
ब्ल-म	गुरु
बल-म-रनमस क्यिस्	गुरुओं के द्वारा,
बस्तम प	निर्दिष्ट, शासन
यङ दग	यथार्थ, सम्यक्
ब्शद पर-ब्य	बताया जायगा
र्जोगस्-सङस	सम्बुद्ध
र्जोगस्-पइ सङस्-र्ग्यस	
ब्रिस्-स्कु	चित्र
ल-सोगस्-(प)	आदि

मछोद-र्तेन	स्तूप, चैत्य
दम-छोस्	सद्धर्म
म्ङोन-फ्योगस्-नस्	अभिमुख होकर
मे-तोग	पुष्प, फूल
बदुग-स्पोस्	धूप
द्ङोस्-पो	सामग्री, वस्तु
चिन्हब्योर-व	जो उपलब्ध हो
यिस्	से, द्वारा
म्छोद-पर-ब्य	पूजा करनी चाहिए
कुन ब्.सङ-	समन्त भद्र
कुन-तु-ब्सङ-पो	
स्प्योद या स्प्योद्-प	चर्या, चरित्र, आचरण
लस	में से
ग्सुङस-प (यि)	कथित
र्नम-प-ब्दुन	सात प्रकार
क्यङ	भी, अपि
ब्यङ-छुब सुञ्ङि-पो (इ)	बोधिगर्भ
म्थर-थुग-पर	पर्यन्त
मि-ल्दोग-प	अनिर्वचनीय
सेमस-दग-गिस	चित्त से
द्कोन-म्छोग-ग्सुम	त्रिरत्न

ल	की, पर
रब-दद-चिङ	श्रद्धा कर
पुस्-मो पुस्-मोइ-ल्ह ङ	घुटना
सर या स-ल	भूमि पर
ब्चुगस्-नस	टेक कर, स्थापित कर,
थल-मो	अंजलि
स्ब्यर-वर-ब्यस्-नस्	जोड़ कर, बांध कर
दङ-पो	प्रथम, पहले
स्क्यबस-ह्ग्रो स्क्यबस्-सु-ह्ग्रो-व	शरण में जाना,
लन-ग्सुम	तीन बार
ब्य	चाहिए, पक्षी
दे-नस्	तब
ब्यमस-पइ-सेमस्	मैत्रीचित्त
ब्स्गोमस्-नस्	भावना कर
ङन-सोङ	दुर्गति
स्क्ये-(व)	जन्म
ह्छि-ह्फो	मृत्यु-च्युति
सोगस्-क्यिस्	आदि से
स्दुग-ब्स्ङल-व	पीड़ित
ह्ग्रो-व	जगत

म-लुस्	अशेष, समग्र
ब्ल्तस् ते	दृष्टिपातकर, दृष्टि में रखते हुए
स्दुग ब्स्ङल ग्युं म्छन	दुःख का कारण,
लस्	से
थर पर-ह्दोद प-यिस्	मुक्त करने की कामनाओं से
दम-ब्चह	प्रतिज्ञा
ब्यं-छुब-सेमस्	बोधिचित्त
ब्स्क्येद-पर-ब्य	उत्पन्न करना चाहिए
दे-ल्तर	इस प्रकार
स्मोम पइ-सेमस्	प्रणिधान चित्त
योन-तन	गुण
स्दोङ-पो-ब्कोद-पइ-मदो	गण्डव्यूह सूत्र
ब्यमस्-प	मैत्रेय
ब्तमस्-पस्	मैत्रेय द्वारा
ब्शद-प	वर्णन, भाष्य
मदो-क्लोग-प	सूत्रों का पाठ करना
हम	अथवा
ब्ल-म-लस्	गुरु से
म्ञन-ते	श्रवण करके
र्ज़ोगस्-पइ-ब्यङ-छुब	सम्बोधि
म्थह-मेद-प	अनन्त

र्नम-पर-शेस्-प	समझना, विज्ञान,
ब्यस्-ल	कर, के
दे-ग्नस्-एयु-स्छन-दु	उसकी स्थिति के लिए
यङ-दङ-यङ-दु	बार-बार
सेमस्-ब्स्क्येद-पर-ब्य	चित्तोत्पाद करना चाहिए
द्पह-ब्यिन-ग्यिस्-मृदो	वीरदत्त परिपृच्छ सूत्र
दे-थि-ब्सोद-नमस्	इसके पुण्य
रब-तु-ब्स्तन-	प्रदर्शन किया
छिगस्-ब्चद	पाद, गाथा, पद्य
छिगस्-सु-ब्चद-प मदोर-ब्स्दुस्	संक्षिप्त
मदोर-ब्स्दु-न	संक्षेप में
हदिर	यहां, उधर
ब्रि-ब्य	उल्लेख किया जायगा
गल-ते	यदि, अगर
गसुगस-	रूप, आकृति, साकार
म्छिस्-न	होता तो- (ते, ती)
नमस्-मखह	आकाश, नभ,
खमस्	धातु
दे-वस्	उसकी अपेक्षा,
ल्हग-पर-ह्ग्युर	अधिक होगा

गङ्गह	गङ्गा, गंगा
ब्ये-म	बालु, रेत
ग्रङस-स्त्रेद	संख्या तुल्य
सङस्-एयस-शिङ	बुद्ध क्षेत्र
मि-गङ-गिस्	जो किसी व्यक्ति से
रिन-छेन-दग-गिस	रत्नों से
कुन-	सर्वत्र, समस्त
ब्कङ-स्ते	भर कर
ह्जिग-र्तेन-म्गोन	लोकनाथ
फुल-व	समर्पित
बस	की अपेक्षा
गङ-गिस्	जो कोई, जिसने, किसी ने
थल-मो-स्ब्यर-ब्गियस-ते	अंजलि जोड़ कर
ब्यङ-छुब-तु	बोधित्व की ओर
सेमस-ब्तुत	नत,-चित्त, चित्त झुकाया
न	तो
ह्-दि (नि)	यह
ख्यद-पर-ह्फगस्	विशेष, विशिष्ट, श्रेयस्कर
म्थह	अन्त
म-म्छिस् (सो)	नहीं है
ब्यङ-छुब-स्मोन-पइ सेमस्	बोधिप्रणिधिचित्त

ह्नद-प-मङ-पोस्	अनेक परिश्रों के द्वारा
कुन-तु	सर्वत्र
स्पेल्-ब्य् (शिङ)	प्रसार करना चाहिए
स्क्ये-न गशन्-दु	जन्मान्तर में
हङ	भी
द्रन्-दोन-दु	स्मरण करने के लिए, स्मरणार्थ
जि-स्कद-ब्शद-पइ	यथोपदिष्ट
ब्स्लब-प	शिक्षा
योङ-स्-सु	परि
ब्स्त्रुङ	पालन करना चाहिए
ह्जुग-समेस्	(बोधि) प्रस्थानचित्त
ब्दग-त्रिद-स्दोम-प	आत्म-संयम
म-ग्तोगस्-प	बिना, सिवाय, छोड़
ह्फेल-व (२)	वृद्धि
हग्युर-म-यिन	नहीं होती, ता, ते, तीं
दे-फियर	इसलिए
ह्बद-पस्	यत्न पूर्वक
ङेस-पर	अवश्य
ब्लङ	ग्रहण करना चाहिये
सो-सोर-थर-पइ-स्दोम-प	प्राति मोक्ष नियम
ल्दन-प	युक्त

ब्य-ङछुब-सेमस्-पइ-स्दोम प	बोधिसत्व संवर
स्कल-व-योद्-प	अधिकारी, भाग्यवान्
ग्शन-दु-मिन	अन्यथा नहीं
रिगस्-बदुन	सात प्रकार
दे-ब्शिन-ग्शेगस्-प	तथागत
छङस-स्प्योद	ब्रह्मचर्य
म्छोग	उत्तम, उत्कृष्ट
द्गे-स्लोङ	भिक्षु
ब्शेद	माना जाता है
ब्यङ-छुब-सेमस्-पइ-स	बोधिसत्व भूमि
छुल-ख्रिमस्	शील
लेहु	अध्याय, परिवर्त
छोगा	विधि
यङ-दग	सम्यक्
म्छन-ञिद्	लक्षण
ब्ल-म-ब्सङ-(पो)	सद्गुरु
स्दोम-प-ब्लङ	दीक्षा लेनी चाहिए
म्खस (प)	कुशल, निपुण
ब्दग-ञिद	स्वयं
स्दोम प-ह्बोगस-ब्सोद	दीक्षा देने मे समर्थ
स्ञिङ-र्जे-ल्दन (प)	करुणामय

शेस्-पर-ब्य	समझना चाहिए
हदि-हद्र-वड़	ऐसे, ऐसा, इस प्रकार
म रञ्जेद न	प्राप्त न हो सके तो
ग्शन	अन्य
स्डोन छे	प्राचीन काल में
अं ब-रह-ज	अम्बराज
जि-ल्तर	जिस प्रकार, यथा
शिङ	क्षेत्र
दे-ब्शिन	उसी प्रकार, तथा
स्प्यन-सङ-रू	सामने, सम्मुख
ह्ग्रो-व-थमस्-चद	समस्त जगत
म्ग्रोन-दु-गञेर	आमंत्रित करता हूँ
दे-दग	उन्हें, वे
ह्खोर-व	आवागमन
लस	से
स्ग्रोल-लो	मुक्त करता हूँ, मुक्त करूंगा
ग्नोद-सेमस	प्रतिहिंसा
खो-वड़-सेमस्	क्रोध चित्त
सेर-स्न	मात्सर्य
फ्रग-दोग	ईर्ष्या
देङ-नस्-ब्सुङ-स्ते	आज से लेकर

ब्यङ-छुब-थोब-किय-बर-दु	बोधित्व की प्राप्ति तक
मि-ब्यह्रो	नहीं करूंगा, नहीं करना
छङ-स् पर-स्प्योद-प	ब्रह्मचर्य
स्प्यद-व्य-	निर्वाह करूंगा, पालन करूंगा
स्दिग-(प)	पाप, पातक
हदोद-प	राग
स्पङ वर ब्य	त्यागदूंगा, त्यागना चाहिए
छुल-ख्रिमस्	शील
द्गह-व	प्रीति, प्रिय
र्जेस सु ब्स्लब-प	अनुशिक्षण करना
म्युर वड़ छुल ग्यिस	शीघ्रता से
मि-स्प्रो-वर	उत्साहित नहीं करना
ग्चिग	एक
र्ग्यु (र)	हेतु, के लिए
फ्यि-मड़-मु-म्थह	अन्तरान्त
ग्नस्-पर-ब्य	रहना चाहिए
छद-मेद	अपार, अप्रमेय, असीम
ब्सम-ग्यिस्-मि-ख्यब-प	अचिन्त्य
र्नम-पर स्ब्यङ-वर-ब्य	विशुद्ध करना चाहिए
मिङ-नस्-ग्सुङ-व	नाम लेना
फ्योगस ब्चु-दग-तु	दश दिशाओं में

र्नम-पर-गनस्	अवस्थित
लुस्	काय, तन
ङग	वाक
लस्	कर्म
थमस्-चद-दु	सर्वथा, सर्वत्र,
दग पर-ब्य	शोधन करना चाहिए
यिद-क्यि-लस्	मानसिक कर्म
क्यङ	भी
मि-द्गेइ-लस्	अकुशल कर्म
मि-ब्यहो	नहीं करना चाहिए
र्नम-दग	विशुद्ध
ब्स्लब-प-गसुम	त्रिशिक्षा
ल	पर
गुस्-फ्यिर-ह्ग्युर	श्रद्धा बढ़ती जायगी
ह्बद-पर-ब्यस्-पस	यत्न पूर्वक
र्जोगस्-पइ-ब्यङ-छुब	संबोधि
छोगस्	सम्भार
योङस् सु र्जोगस्-पर-ह्ग्युर	परिपूर्ण हो जायगा
ब्सोद-नमस छोगस्	पुण्य-सम्भार
-येशेस् छोगस्	ज्ञान-सम्भार
म्ङोन-शेस्	अभिज्ञा

ब्शेद	मानता है, मान्यता है
जि-लूतर	जैसे, यथा
ह्दब-ग्शोग	पंख
म र्ग्यस-पङ्	बिना बढ़े
ब्य	पक्षी
न्खह-ल	आकाश में
ह्फुर मि-नस	उड़ नहीं सकता, उड़ने में असमर्थ
दे बशिन	वैसे, तथा
स्तोबस्	शक्ति, क्षमता
ब्रल-व	हीन, रहित, बिना
सेमस्-चन दोन	प्राणियों का हित
ब्येद-नुस्-प-मिन	नहीं कर सकता
म्ङोन-शेस्-ल्दन-प म्ङोन-शेस्-चन	अभिज्ञानी
ञिन-म्छन	दिन और रात, रात-दिन
ञिन म्छन-ग्चिग	२४ घंटे
स्क्ये-व-ब्र्ग्यर-यङ	शत जन्मों में भी
योद-म-यिन	नहीं होता
म्युर दु	शीघ्रता से
ह्दोद-म्युर-प	इच्छा की हो,

ह्ग्रब-पर ह्ग्युर	सिद्ध होगा
ले-लो	आलस्य
ले-लोस्-मिन	आलस्य से नहीं, न कि आलस्य से
शि ग्नस	शमथ, समाधि
ग्रुब-प-म-यिन-पर	सिद्ध किए बिना
ह्ब्युङ-वर-मि-ह्ग्युर	उत्पन्न नहीं होता, ते, ती
दे-फ्यिर	इसलिए
ब्स्ग्रुब-पइ-फ्यिर	साधना के लिए, साधन करने के लिये
यन-लग	अंग
ञमस्-प	हीन, खण्ड होना
रब-तु-ह्बद-दे	प्रयत्न से
ब्स्गोमस्-ब्यस्-क्यङ	भावना करने पर भी
लो-स्तोङ-फ्राग	हजार वर्ष, सहस्त्राब्दियां
तिङ-ह्जिन	समाधि
ह्ग्रुब-पर-मि-ह्ग्युर	सिद्धि नहीं होगी; नहीं होगा
दे-फ्यिर	अतः
दमिगस्-प	आलम्बन
ग्शग-पर-ब्य	रखना चाहिए
र्नल-ह्ब्योर-(व)	योग, योगी

शेस्-रब-फ-रोल-फ्यिन	प्रज्ञा-पारमिता
स्ग्रिब-प	आवरण (क्लेश)
सद्-मि-ह्ग्युर	क्षीण नहीं होता
ञोन-मोङस-स्ग्रिब-प	क्लेशावरण
शेस्-ब्यङ्-स्ग्रिब-प	ज्ञेयावरण
स्पङ-वङ्-फ्यिर	त्याग के लिए
र्तग-तु	सदा
थबस्-ब्चस्	उपाय के साथ
बस्गोम-पर-ब्य	भावना करनी चाहिए
थबस्-दङ-ब्रल-व (ङ)	उपाय रहित
शेस्-रब ब्रल-वङ्	प्रज्ञा रहित
गङ फ्यिर	क्योंकि
ह्छिङ-व	बन्धन
दे-बस्	अतएव
ग्ञिस्-क	दोनों
गङ	क्या, जो
शेस	ऐसा, इति
थे-छोम	सन्देह
स्पङ-वङ्-फ्यिर	दूर करने के लिए
द्ब्ये व	भेद
ग्सल-वर-ब्य	स्पष्ट किया जाता है

स्पङ्स् पइ	छोड़, छोड़ा हुआ
स्बियन-पइ-फ-रोल फ्यिन	दान पारमिता
ल-सोगस् प	आदि, इत्यादि
गोमस् (प)	अभ्यस्त
द्बङ-गिस्	के कारण,
गङ-शिग	जो
देस्	वह, उसके द्वारा, उसने
ब्दग-मेद	नैरात्म्य
ग्चिग-पु	केवल, अकेला, ले, ली
मिन	नहीं
फुङ-पो	स्कन्ध
खमस्	धातु
स्क्ये मृछेद	आयतन
स्क्ये-व-मेद-प	अनुत्पाद
र्तोगस् ह्य्युर-व	समझना, बोध होना
र— -बशिन	स्वभाव
स्तोङ-जिद	शून्यता
शेस् प	समझना, बुद्धि, ज्ञान
योद प	सत्
स्क्ये-व	उत्पत्ति, जन्म
रिगस्-मिन	अयुक्त

मेद् प	असत्
हङ	भी
नम-मखड्ऽ मे-तोग	ख-पुष्प, आकाश कुसुम
ब्शिन	तरह, समान
ञेस्-प	दोष
ग्ञिस्-कर	दोनों को, दोंनो पर
थल्ह-ग्युर	प्रासंगिक
थल्-वर-ह्ग्युर	मानना होगा
फ्यिर	क्योंकि
ग्ञिस्-क	उभय
ह्ब्युङ-व-मिन	उत्पत्ति नहीं होती
द्ङोस्-पो	वस्तु, पदार्थ
रङ-लस्	स्वतः, अपने आपसे
गशन-लस्	परतः, दूसरे से
ग्ञिस्-क-लस्	उभयतः
र्ग्यु-मेद-लस्	अहेतुक से
मिन	न, नहीं, नहीं है
दे-यि-फ्यिर	इसलिए
ङो-वो-ञिद-क्यिस्	स्वरूपतः
ङो-वो	स्वरूप
रङ-बशिन-मेद-(प)	निःस्वभाव

यङ-न	अथवा, या
ग्चिग-दङ-दु-मस्	एकानेक रूप से
र्नम-द्प्यद-न	विचार करने पर, विचार किया जाय तो
मि-द्मिगस-प	अनुपलब्ध
स्तोङ-ञिद-ब्दुन-चु	शून्यता सप्तति
रिगस्-प-द्रुग-चु (प)	युक्तिषष्ठिका
द्बु-म-र्च-ब (अु-म च-ब)	मूल माध्यमिक
द्ङोस्-पो र्नमस्-किय-रङ-ब्शिन	पदार्थों का स्वभाव
स्तोङ-प	शून्य
स्तोङ-प-ञित	शून्यता
गशुङ	ग्रन्थ
मङस्-ग्युर-पस्	बहुलता के कारण
म-स्प्रोस्	विस्तार से नहीं लिखा गया
ग्रुब-म्थह	सिद्धान्त
चम	मात्र, भर
दोन-दु	निमित्त, लिए
म-मथोङ-व	अदृष्ट,
रनम-र्तोग-मेद-प	निर्विकल्प
स्रिद-प	भव, संसार

र्नम-र्तोग	विकल्प
र्नम पर-र्तोग-पइ-ब्दग-ञिद	विकल्पात्मक
म्य-ङन-ह्दस्-प	निर्वाण
म्छोग	परम, उत्तम
ब्चोम-ल्दन-(ह्दस्)	भगवान्
म-रिग-(प)	अविद्या
छेन-पो	महान
ह्खोर-वइ-र्ग्य-म्छो-(र)	भव-सागर (में)
ल्तुङ-वर-ब्येद	गिराता है
तिङ-ह्ज़िन-ल-ग्नस्-प	समाधिस्थ होना
नम-म्खह-ब्शिन-दु	आकाश की भांति,
र्तोग-मेद	अविकल्प
ग्सल	साक्षात्कार होता है
र्नम-पर-मि-र्तोग-प-	अविकल्प प्रवेश धारणी
ल-ह्जुग-पइ-ग्सुङस् दम-छोस	सद्धर्म
ह्दि-ल	इस पर
र्ग्यल-वइ-स्रस	जिन पुत्र (=बोधिसत्व)
ब्सम-प	चिन्तन या चिन्तन करना
बग्रोद-द्कह	दुर्गम
ह्दस-ते	पार कर

रिम-ग्यिस्	क्रमशः
थोप-पर-ह्ग्युर	प्राप्त करता है
लुङ	आगम
रिगस्-प	युक्ति
द्रोद	उष्णता
रव-दृगह	प्रमुदिता
युन-मि-रिङ	विलम्ब नहीं होता है
स्ङगस्-मथु	मंत्र शक्ति
जिद-लस्	द्वारा, आपसे
ग्रुब-प-यि	सिद्ध किए
शि-(व)	शान्त
र्ग्यस्-(प)	विपुल
बुम-प-	कलश
ब्सङ-ग्रुब	भद्र सिद्ध
ग्रुब-छेन	महा सिद्ध
व्रग्यद	आठ
ब्दे व	सुख
योङस्-सु-र्जोगस्-प	परिपूर्ण
ह्दोद-प	मानता है, काम
ब्य-व	क्रिया, कार्य
स्प्योद-(प)	चर्या

स्प्योद-पइ-र्ग्युद	चर्या तंत्र
ग्सङ-स्ङगस्	गुह्यमंत्र
स्प्योद-प	आचरण करना, चरित्र
स्लोब-द्पोन	आचार्य
द्बङ-ब्स्कुर	अभिषेक
ब्स्ञेन-ब्कुर	आदर-सत्कार
रिन-छेन	रत्न, बहुमूल्य
स्ब्यिन (प)	भेंट करना, देना, दान
ब्कह-ब्स्ग्रुब	आज्ञा पालन
ब्ल-म-द्म-प	सद्गुरु
म्ञेस-पर-ब्य	प्रसन्न करना चाहिए
स्दिग-कुन	समस्त पाप
र्नम-द्ग	विशुद्ध, धुल जाना
ब्दग-ञिद	स्वयं, खुद
द्ङोस्-ग्रुब	सिद्धि
स्कल-ल्दन	भागी, अधिकारी
ह्ग्युर	होता है, बनता है
दङ-पोइ-सङस्-र्ग्यस्	आदि बुद्ध
र्ग्युद-छेन	महातन्त्र
ब्कग-प	निषेध,
छ्ङस्-पर-स्प्योद-प	ब्रह्मचारी

ब्लङ-मि-ब्य	नहीं ग्रहण करना चाहिए
द्कह-थुब	तप
ञमस्-प	नष्ट
ब्र्तुल-शुगस्-चन	व्रती
ब्र्तुल-शुगस्	व्रत
फम-प	पाराजिक
ङन-सोङ	दुर्गति
नम-यङ	कदापि
ञन- (प)	श्रवण
ह्छद-(प)	व्याख्यान, उपदेश देना
स्ब्यिन-स्रे ग	होम
म्छोद-स्ब्यिन	यज्ञदान
दे-ञिद-रिग-(प)	तत्व ज्ञानी
ञेस्-प	अपराध, आपत्ति, दोष
ग्नस्-ब्र्तन	स्थविर
मर-मे-म्जद	दीपंकर
द्पल	श्री
मदो	सूत्र
ब्यङ-छुब-होद	बोधिप्रभ
ग्सोल-ह्देबस्	प्रार्थना, आग्रह, भजन
म्दोर-ब्स्दुस्	संक्षिप्त

ब्यस्	किया,
ये-शेस्	ज्ञान
र्ज़ोगस्-सो	समाप्त
बोद-क्यि-लोच्छ-व	तिब्बती दुभाषिया
द्गे स्लोङ	भिक्षु
द्गे-वङ ब्लो-ग्रोस्	कल्याणमति
ब्स्ग्युर-(व)	अनूदित
शुस्-(दग)	संशोधित
ग्तन-ल-फब-प	निर्धारित
ग्तन-ल-फब-पहो	निर्धारित किया गया